लेख :

कामकाजी महिला की दोहरी भूमिका

:श्रीमती रमा उमेश साबू

वो ज़माने बीत गए जब किसी को मात्र इसलिए दोयम दर्जे की माना जाता था कि वह कोई महिला है, नारी है -यानी "अबला" है. आज के युग की महिला एक ऐसी शै है जो कशिश और सौन्दर्य के साथ प्रतिभा ही नहीं शक्ति का भी एक मिलाजुला सम्मिश्रण है .प्रकृति की इस नायाब रचना ने आज के युग में अपनी पारंपरिक "गृहिणी" वाली छवि से बाहर निकलकर उन तमाम क्षेत्रों में अपनी पैठ बना ली है जो कभी पुरुषों के एकाधिकार क्षेत्र हुआ करते थे . एक ओर यह सामयिक परिवर्तन सम्पूर्ण महिला जगत के लिए गौरव का विषय है वहीं नारी शक्ति के लिए नए-नए चैलेंज भी सामने ला रहा है. नारी जब मात्र गृहिणी थी या उससे भी परे कोई "भोग्या " समझी जाती थी, तब नारी के समक्ष चुनौतियाँ भी अलग थीं लेकिन आधुनिक युग की महिला जब अपने परिवेश को विस्तृत कर स्वयं को दोहरी ,तिहरी या नानारूप भूमिकाओं में प्रस्तुत करती है तो वैयक्तिक, पारिवारिक ,सामाजिक, आर्थिक....सभी तरफ से नितनई चुनौतियाँ भी स्वयंमेव ही अपने पूर्णाकार में सामने आ जाती है .मानव सभ्यता के विकास में किसी भी कालखंड पर नज़र डाल लीजिए, नारी कभी भी न तो अबला साबित हुई है ना ही कभी पुरुष वर्ग से कमतर रही . हॉ, उसे कमतर की तरह , किसी बेबस की तरह प्रस्तुत भले ही किया गया हो, किन्तु अंततः नारी ने अपनी सम्पूर्णता को ही समाज के समक्ष साबित किया है . जब नारी स्वेच्छा से कोई चुनौती स्वीकार कर "कामकाजी" का लेबल स्वयम पर चस्पा करती है तो इस के पीछे कोई शौकिया फितूर नहीं वरन अधिकांश मामलों में निजी,पारिवारिक या सामाजिक आवश्यकता ही होती है और तब उसे इस दोहरी भूमिका के दोनों या सभी पात्रों में न्यायसंगत सामंजस्य बिठाना पड़ता है .लेकिन इसमें अनोखा क्या है - कुछ भी तो नहीं ; क्योकि "कुछ" पाने के लिए "कुछ और" को खोना शाश्वत सत्य है . आप आम खायेंगे भी और उसे साबुत भी रखेंगे ,ये नामुमकिन है .जब कोई महिला अपने पारंपरिक स्वरुप से बाहर आ एक कामकाजी व्यक्ति हो जाती है तो एक ओर उसे आत्म-गौरव , सामाजिक और पारिवारिक प्रतिष्ठा, रुतबा , पैसा और परोक्ष में एक अद्भुत शक्ति प्रतिफल के रूप में सायास प्राप्त होती हैं वहीं दूसरी ओर मानसिक एवं व्यावहारिक स्तर पर चंद चुनौतियाँ भी पेश आती हैं जो और कुछ नहीं सिक्के का दूसरा पहलु है. इसे महिला जगत ने वैसे ही स्वीकार करना होगा जैसे दिन के साथ रात; या सुख के साथ दुःख .यह तो प्रकृति

का एक नियम है जो पुरुषों पर भी उतनी ही बेदर्दी से लागू होता है (और वे चाहे-अनचाहे सहते भी हैं).जब कोई महिला रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में किसी नए आयाम को छूने का फैसला करती है तो उसके अवचेतन मन में कहीं न कहीं यह तथ्य भी समाविष्ट तो हो ही जाता है कि जीवन की घड़ियों में तो आगे भी चौबीस घंटे का ही दिन होने वाला है अतएव अपनी ही किसी गतिविधि को समेटना होगा . जीवन की ऐसी किसी भी कम हो रही गतिविधि को नापने का पैमाना "क्वांटिटी" के बजाय "क्वालिटी" से तय करके वह महिला अपने संतुष्टि के ग्राफ को समान स्तर पर सहर्ष बनाए रख सकती है .ज़रा सोचिए, दस घंटे साथ बैठकर बेमकसद की हुज्जत-बाजी से तीन घंटे का अनुरागमय संग क्या ज्यादा खुशगवार नहीं होगा !

हो सकता है कुछ अरसा पहले किसी महिला के लिए कामकाजी होना एक चस्का हो, शौकिया तौर पर अपनाया हुआ फैशन का प्रतिरूप हो किन्तु बदलती पारिवारिक व् सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के मद्देनजर आज की महिला के लिए यह एक आवश्यकता के रूप में ढलता जा रहा है जो पूर्णतः समीचीन भी है .

प्रस्तुत विषय को देखने का एक नजरिया यह भी बनता है कि महिला तो सदियों से ही दुहरी त्रिहरी भूमिका में ही रही है . ये अलग बात है कि उसके इस "डबल रोल " को उतनी अहमियत नहीं मिली वर्ना जब कभी भी महिला एक प्रेयसी थी ,उसी समय में वो किसी की बहु भी थी; बेटी भी थी , गृहिणी अथवा माँ भी थी . कहीं की नागरिक थी तो वहीं की रानी - महारानी भी थीं . कुदरत की इतनी विशिष्ट रचना , जिसे हम नारी - शक्ति के रूप में जानते हैं पहले से ही इतनी ऊर्जावान तथा प्रतिभाशाली रही है कि एक ही समय में अलग अलग किस्म के बहुत से कार्यों को संपन्न कर स्वयं को "मल्टी-टास्कर" साबित किए हुए है , अगर "कामकाजी " नाम का एक तमगा और भी अपने नाम के साथ लगा ले तो उसकी सामर्थ्य कोई सवाल खड़े करने का हक किसी को नहीं देती . हालाँकि नारी विकासवाद का वर्तमान चरण अभी तो मात्र प्रारंभिक अवस्था में है लेकिन संकेत किसी बात को इंगित करते हैं तो यही कि नारी का भविष्य उसके "कामकाजी" स्वरुप को और भी वृहद् आयाम देने वाला है जो किसी संलग्नक के रूप में अपने साथ और भी दुरूह किस्म की चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करेगा लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि आधुनिक भारत की प्रतिभावान महिलाएं आने वाली सारी चुनौतियों को पार कर अपना सर्वतोमुखी स्वरुप देश और समाज के समक्ष प्रस्तुत करती रहेंगी . किसी शायर ने कहा भी तो है :

कोई चले, चले न चले , हम तो चल पड़े,

मंजिल की जिसको धुन हो, उसे कारवां से क्या !

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

लेखिका :-

श्रीमती रमा उमेश साबू
फ्लैट -203, साईं सागर अपार्टमेंट,
24-25, सिल्वर ओक्स कॉलोनी, अन्नपूर्णा रोड़,
इंदौर - 452009 (मध्यप्रदेश)
मो. 98931-51888